डॉ. नवीन नन्दवाना
हिन्दी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राजस्थान)

ढोला मारू रा दूहा

मारवणी का संदेश - 118

ढाढी, जइ प्रीतम मिलइ, यूँ दाखविया जाइ।
जोबण छत्र उपाड़ियउ, राज न बइसउ काइ।।

- **भाव-**
- हे ढाढी, यदि प्राणधार मिले तो जाकर इस प्रकार कहना—यौवन ने छत्र उठाया है, हे राजन (उसकी छाया में आकर) क्यों नहीं बैठते ?

मारवणी का संदेश - 119

ढाढी, जइ साहिब मिलइ, यूँ दाखविया जाइ।
जोबण कमळ विकासियउ, भमर न बइसइ आइ।।

- **भाव-**
- हे ढाढी, यदि स्वामी मिले तो जाकर यों कहना— यौवनरुपी कमल खिल गया है, हे भ्रमर, तुम आकर क्यों नहीं बैठते ?

मारवणी का संदेश - 120

ढाढी, एक सँदेसड़उ, ढोलइ लगि लइ जाइ।
जोबन चाँपउ मउरिउ, कळी न चुट्टइ आइ।।

- **भाव-**
- हे ढाढी, एक सँदेसा ढोला तक ले जाओ- यौवनरूपी चंपा मौरयुक्त हो गया है। तुम आकर कलियाँ क्यों नहीं चुनते ?

मारवणी का संदेश - 121

ढाढी, एक सँदेसड़उ, ढोलइ लगि लइ जाइ।

कण पाकउ, करसण हुअउ, भोग लियउ घरि आइ।।

- **भाव-**
- हे ढाढी, एक सँदेसा ढोला तक ले जाओ—खेती हो गई, अन्न पक गया, तुम घर आकर अपना भोग लो।

मारवणी का संदेश - 122

ढाढी, एक सँदेसड़उ, ढोलइ लगि लइ जाइ।
जोबण फट्टि तलावड़ी, पाळि न बंधउ काँइ।।

- **भाव-**
- हे ढाढी, एक सँदेसा ढोला तक ले जाओ—यौवनरूपी तलैया फूट चली है, क्या तुम आकर पाल नहीं बाँधोगे?

मारवणी का संदेश - 123

पंथी, एक सँदेसड़उ, लग ढोलउ पैहचाइ।
विरह महादव जागियउ, अगिन बुझावउ आइ।।

- **भाव-**
- हे पथिक, एक सँदेसा ढोला तक पहुँचाओं- विरहरूपी प्रचंड दावानल प्रज्वलित हो गया है, आकर अग्नि को बुझाओ।

मारवणी का संदेश - 124

पही, भमंता जइ मिलइ, तउ प्री आखे भाय।

जोबण बंधन तोड़इ, बंधण घातउ आय।।

- **भाव-**
- हे पथिक, भ्रमण करते हुए यदि मिलो तो हे भाई, मेरी प्रियतम से कहना—यौवन बंधन तोड़ देगा, तुम आकर बंधन डालो।

मारवणी का संदेश - 125

पंथि, एक सँदेसड़उ, लग ढोलइ पैहचाइ।

निकसी वेणी सापणी, स्वात न वरसउ आइ।।

- **भाव-**
- हे पथिक, एक सँदेसा ढोले तक पहुँचाओ—वेणीरूपी नागिन निकली है, तुम आकर स्वाति का जल बरसो न।